कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

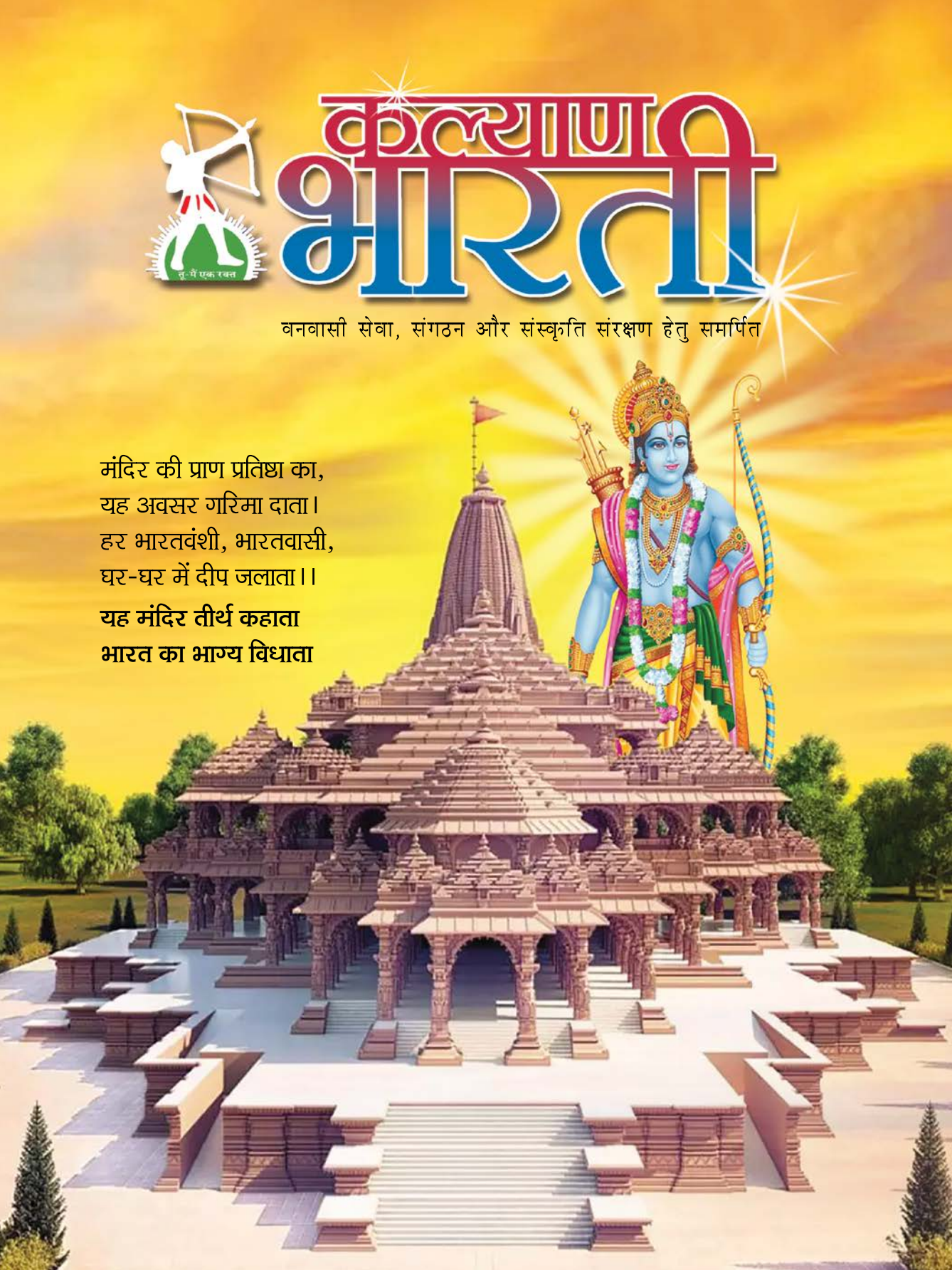

मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का,
यह अवसर गरिमा दाता।
हर भारतवंशी, भारतवासी,
घर-घर में दीप जलाता।।

यह मंदिर तीर्थ कहाता
भारत का भाग्य विधाता

शिशु मेला की झलकियाँ

शिशु-मेले का हेतु नहीं केवल मन-रञ्जन माना जाये,
उनकी निश्छल मुस्कानों के पीछे छिपी हैं उनकी कलायें।
देखो बंधु! उनकी प्रतिभा व्यर्थ न यूँ ही जाने पाए;
विश्व-धरातल पर उनको हम, लाने का संकल्प उठायें।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 34, अंक 3
अक्टूबर-दिसम्बर 2023 (विक्रम संवत् 2080)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : +91 33 4803 4533

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय...भारत की अंतरात्मा... 2
- राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा... 3
- रानी गाईदिन्ल्यू... 4
- नैपुण्य शिविर : नेतृत्व कौशल... 7
- तू-मैं एक रक्त का जीवन्त... 8
- चिकित्सा शिविर 9
- अमृत वचन 9
- गणेश पूजन के साथ हुआ... 10
- उदारता, दान और धर्म... 11
- स्वावलंबन योजना का आलोक... 12
- शोक संदेश 12
- अमृत वचन 12
- स्वप्न हुआ साकार 13
- संगठन के बढ़ते कदम... 14
- अनुकरणीय 15
- बस्तर आंचलिक शब्दों ... 15
- बोध कथा... व्यक्ति की सुंदरता... 16
- कविता... भारत का भाग्य... 16

संपादकीय...

भारत की अंतरात्मा राम में बसती है

कण-कण में रमण करने वाली परम सत्ता का नाम है राम। राम अनादि हैं और अनंत भी। राम अविगत, अकथ, अपार हैं। इस देश में जो कुछ सर्वोत्तम है वह कहीं ना कहीं जाकर राम से जुड़ता है। भगवान श्री राम साक्षात् धर्म के स्वरूप हैं और राम मंदिर हमारे पूर्वजों के बलिदान और भावनाओं की सिद्धि है। राम सर्वत्र व्यापक होने के साथ-साथ एक देशव्यापी भी हैं। माता शबरी की परम तपस्या का साध्य और गिलहरी की उपासना का लक्ष्य राम हैं। भारत की अंतरात्मा राम में बसती है और राम भारत के प्रत्येक हृदय में विराजमान हैं। वे हमारे जीवन में आती जाती सांसों की तरह ओतप्रोत होकर एकरूप हो गए हैं।

ऐसे करोड़ों हिंदुओं के आराध्य राम का सैकड़ों वर्षों की घोर तपस्या के बाद अयोध्या की पावन धरा पर विराट मंदिर निर्मित हो रहा है। जन-जन के हृदय में विराजने वाले राम अपनी ही धरती पर अपनी ही जन्मभूमि से वंचित थे। भारत माता की गोद का सबसे लाड़ला लाल अब फिर से पूरे गौरव के साथ माता की गोदी में किलकारियाँ भरेगा। 22 जनवरी 2024 भारत के इतिहास का स्वर्ण-पृष्ठ होगा, ऐसा स्वर्ण-पृष्ठ जिस पर भारत के अनंत गौरव की गाथा लिखी जाएगी।

भारत के माथे पर लगे कलंक के प्रतीक बाबरी ढाँचे के विध्वंस के बाद नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ता वीएस नॉयपाल ने कहा था कि सदियों से सुषुप्त भारत की चेतना अब जाग चुकी है। आज जब प्रभु श्री राम का वैभवशाली मंदिर बनकर तैयार हो रहा है और प्रभु श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा होने जा रही है तो ऐसे समय में सिर्फ यही कहा जा सकता है-

रामराज बैठे त्रैलोका।
हर्षित भये गए सब शोका।।

हम सब एक नये भारत का दर्शन कर रहे हैं। यह भारत के सांस्कृतिक उत्कर्ष का स्वर्णकाल है जब शताब्दियों के दुख दर्द में भेदभाव का स्थान नूतन उत्कर्ष के सूर्य की आभा ले रही है। विराट राम मंदिर की स्थापना हिंदू संस्कृति के अनंत चेतना की प्रतिस्थापना है। श्री राम का मंदिर केवल परब्रह्म परमात्मा का धाम ही नहीं बल्कि राष्ट्र-पुरुष की अभ्यर्थना का केंद्र है। श्री राम-मंदिर राष्ट्र-मंदिर है। प्रभु श्री राम के विराजमान होने से विश्व के यशस्वी शिखर पर हमारे राष्ट्र के विराजमान होने का मार्ग प्रशस्त होता है। जिसने राम को जाना वही कह उठा 'राजा हो तो राम जैसा'।

राम के कारण वो क्षण आने वाला है जब विश्व पुन: एक बार कहेगा कि राष्ट्र हो तो भारत जैसा। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा

के दिन हर घर होगा रौशन, मनायेंगे दीपावली, निमंत्रण के लिए घर-घर देंगे अक्षत

- शंकरलाल अग्रवाल, अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष

500 वर्षों के अथक संघर्ष व पूर्वजों के बलिदान के बाद अब राम मंदिर बनकर तैयार हो गया है और 22 जनवरी को प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा के साथ मंदिर का उद्घाटन होगा, जो सौभाग्य का विषय है। राम मंदिर उद्घाटन के दिन प्रत्येक घर पर दीप जलाकर उत्साह के साथ दीपावली का त्यौहार मनेगा।

'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र' ट्रस्ट की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को श्री राम जन्मभूमि मंदिर में भगवान श्री रामलला सरकार के श्री विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा में शामिल होने का निमंत्रण मिला है। प्रधानमंत्री ने इसे अपने जीवनकाल का परम सौभाग्य माना है।

1984 में राम जन्मभूमि पर मंदिर के लिए आंदोलन का शंखनाद होने के बाद से 2019 में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने तक देश भर के जिन-जिन लोगों ने इस संघर्ष में भाग लिया है, उनको विशेष तौर पर मंदिर में दर्शन कराया जाएगा। देश के अलग-अलग हिस्सों से अलग-अलग तिथि पर कारसेवकों को निमंत्रित कर श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट उन्हें दर्शन कराएगा। इसी कड़ी में नेपाल और उत्तर बिहार के कारसेवकों को 2 फरवरी तो दक्षिण बिहार और झारखंड के कारसेवकों को 3 फरवरी 2024 को दर्शन करवाया जाएगा। इसके साथ ही घी-चावल वाला अक्षत कलश, हल्दी, भगवान श्री राम की तस्वीर के साथ निमंत्रण घर-घर पहुँच रहा है। राम मंदिर में राम लला के विराजने की तारीख 22 जनवरी तय हो चुकी है। इस मौके पर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में प्रधानमंत्री खुद मौजूद रहेंगे। राम मंदिर आंदोलन में शहीद होने वालों के परिवार को भी ट्रस्ट की तरफ से कार्यक्रम में शामिल होने का न्यौता दिया गया है। जाहिर है इन परिवारों के लिए यह बेहद भावनात्मक मौका है।

हिंदू परंपरा में गृह प्रवेश उत्तम योग में ही होता है। राम मंदिर के लिए हिंदुओं ने काफी लंबा संघर्ष किया। 22 जनवरी को उत्तम योग होने के कारण इसे नवनिर्मित राम मंदिर के गर्भगृह में प्राण-प्रतिष्ठा के लिए चुना गया है। उल्लेखनीय है कि प्रभु श्रीराम का जन्म अभिजीत योग में हुआ था। अन्य तिथियों के मुकाबले यह योग 22 जनवरी को लंबे समय तक रहेगा। यही कारण है कि प्राण-प्रतिष्ठा के लिए इस तिथि को सबसे उपयुक्त माना गया है। मान्यता है कि इस योग में किसी कार्य को शुरू करने से उसके सफल होने की संभावना अधिक होती है। ■

रानी गाईदिन्ल्यू: नारी शक्ति का प्रतिमान

(जन्म : 26 जनवरी मृत्यु: 17 फरवरी 1993)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन देश भर में कई व्यक्तियों का ऋणी है जो ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के विरूद्ध स्वतंत्रता संग्राम कर रहे थे। वर्तमान पीढ़ी का दुर्भाग्य है कि कई स्वतंत्रता सेनानियों से हम आज भी अनभिज्ञ हैं। ऐसा ही एक नाम है नागालैण्ड की रानी गाईदिन्ल्यू का, जिन्होंने निडरता का परिचय देते हुए ब्रिटिश उपनिवेशवादियों से लड़ाई लड़ी।

आपका जन्म 26 जनवरी, 1915 को रोंगमेई जनजाति में वर्तमान मणिपुर के तामेंगलोंग जिले में हुआ। पिता का नाम लोथोनांग और माता का नाम श्रीमती करोल्लेन्ल्यू था। अपनी संस्कृति और समुदाय की पहचान को संरक्षित करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील थीं। नागालैण्ड में 'जेलियानग्रोंग' नाम से समूह है जो जेमे, लियांगमाई, रोंगमेई और इनपुई - जनजातियों का समूह भी कहा जाता है। ये सारे बन्धु नागालैंड, मणिपुर और असम में निवास करते हैं।

गाईदिन्ल्यू बचपन से ही स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी स्वभाव की थी। यह देख गाँव के लोगों को बहुत आश्चर्य होता था। अपनी आयु के 13 वर्ष से ही वह स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गई। परिणामस्वरूप उन्हें 16 वर्ष की उम्र में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। अगले 14 वर्ष आपने जेल में बिताए। एक बार जवाहरलाल नेहरू उन्हें मिलने आए और जेल से उनकी मुक्ति का आदेश दिया। उन्होंने गाईदिन्ल्यू को 'रानी' की उपाधि दी और 'पहाड़ों की बेटी' के रूप में संबोधित किया। गाईदिन्ल्यू एक ऐसी महिला जिसे कभी कोहिमा, इम्फाल, गुवाहाटी, शिलांग, देश को आजाद होने तक उनको जेल में रखा गया था।

नागालैण्ड का प्रसिद्ध 'हेराक्का आंदोलन'

हेराक्का आंदोलन सबसे पहले हेपाउ जादोनांग ने शुरू किया था। वे इस आंदोलन का वह क्रियात्मक

गाईदिन्ल्यू बचपन से ही स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी स्वभाव की थी। यह देख गाँव के लोगों को बहुत आश्चर्य होता था। अपनी आयु के 13 वर्ष से ही वह स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गई। परिणामस्वरूप उन्हें 16 वर्ष की उम्र में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

रूप देख पाए उससे पहले ही 29 अगस्त 1931 को अंग्रेजों ने उन्हें फांसी पर लटका दिया। यह एक अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। यह देख कर रानी गाईदिन्ल्यू ने भी अपने आप को इस हेराक्का आंदोलन में झोंक दिया। हेराक्का, यह एक धार्मिक-सामाजिक जनआंदोलन था जो 1920 के दशक में जेलियांग्रोंग क्षेत्र में चल रहा था। हेराक्का का शाब्दिक अर्थ है शुद्ध, एक एकेश्वरवादी धर्म है। ब्रिटिश सरकार ने जनजाति समाज को कठोर परिश्रम करने के लिए एक प्रकार से बाध्य किया था। वार्षिक राजस्व कर प्रत्येक घर से लिया जाता था। इसलिए हेराक्का आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था ब्रिटिश सरकार और इसाईयों के विरूद्ध लोगों को जागृत करना। औपनिवेशिक शासन का विरोध करने के लिए जादोनांग को 29 अगस्त 1931 को फाँसी दे दी गई। जादोनांग के पश्चात यह आंदोलन रूक न जाए इसलिए रानी माँ ने अपने आपको इसके साथ कार्यरत कर जोड़ लिया जो उनके जीवन का एक लक्ष्य बन गया। अंग्रेजों की ओर से कार्रवाई शुरू हुई तो वहाँ के कई गाँव जलाकर राख कर दिए गए। अंग्रेजों का दमन चला पर स्थानीय समाज का उत्साह कम नहीं हुआ। 16 मार्च 1932 को असम के हंग्रुम गांव में अंग्रेजों के सैन्य शिविर पर धावा बोल दिया गया। इस संघर्ष में पाँच अंग्रेज सैनिकों को दिनदहाड़े मार दिया परन्तु इसमें सात नागा सैनिक भी शहीद हुए थे।

भारत सरकार द्वारा जारी डाक टिकट

गाईदिन्लयू से परेशान मणिपुर राज दरबार में कार्यरत अंग्रेज अधिकारी हारे ने मणिपुर राजा की इच्छा के विपरीत गाईदिन्ल्यू को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए पहले 200 और फिर 500 का पुरस्कार घोषित किया था। जो गाँव रानी को पकड़ कर देगा उसे दस वर्ष तक करमुक्त कर देंगे ऐसी घोषणा भी की गई थी।

रानी गाईदिन्ल्यू के अनुसार, **'धर्म की हानि संस्कृति की हानि है, संस्कृति की हानि पहचान की हानि है।'** रानी माँ ने इस आंदोलन को राष्ट्रवादी रूप प्रदान कर दिया जो अंग्रेजों के विरूद्ध महात्मा गांधी जी के प्रयासों जैसा ही एक प्रयास था। उन्होंने असहयोग आंदोलन का अपना संस्करण नागा समाज के बीच शुरू किया। उनके तेजस्वी व्यक्तित्व, अदम्य साहस और निर्भयता को देखकर जनजाति समाज के लोग उन्हें सर्वशक्तिशाली देवी मानने लगे। उनके आह्वान पर समाज ने सरकार को कर देना जब बंद कर दिया तो सरकार के लिए एक बड़ा संकट खड़ा हो गया। स्थानीय नेताओं से उन्हें बहुत विरोध होता देख रानी को 1960 में भूमिगत होने के लिए मजबूर होना पड़ा। अंत में भूमिगत आंदोलन समाप्त हुआ और इसके पूर्व रानी माँ को सरकार के साथ समझौता भी करना पड़ा। रानी माँ गाईदिन्ल्यू ने डिप्टी कमीश्नर एस. सी. देव के सामने अपने 320 नागा सैनिकों सहित आत्मसमर्पण कर दिया। आत्मसमर्पण करने के पश्चात सरकार ने कोहिमा फोरेस्ट कॉलनी के सरकारी आवास में उनके निवास की व्यवस्था की।

सरकार उनका सभी प्रकार का खर्च वहन कर रही थी। आगे चल कर उनका घर मानो एक प्रेरणा स्थल बन गया।

जन्मशती के निमित्त रानी माँ की स्मृति में भारत सरकार द्वार एक सिक्का जारी किया गया

जेल से पूर्ण रूप में मुक्त होने के पश्चात् एवं भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् रानी माँ ने अपना जीवन समाज जागरण में लगा दिया। नागा समाज के बीच काम करना प्रारम्भ किया। असम, मणिपुर की सीमा पर आए भुवन पहाड़ पर यात्राओं का आयोजन होने लगा। गाँव-गाँव हराक्का सम्मेलन, मंदिर बनाना शुरू हुआ। पुराने भजनों का संग्रह किया गया और नए भजनों की रचना की गई।

रानी माँ पेजावर मठ के स्वामी विश्वेशतीर्थ महाराज से मिली। प्रयागराज कुम्भ में आयोजित एक सम्मेलन में उपस्थित रहीं। दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली के माननीय संघचालक लाला हंसराज जी की उपस्थिति में विशिष्ट अतिथि बनीं। विश्व हिन्दू परिषद एवं वनवासी कल्याण आश्रम के सतत सम्पर्क में रहीं। वनवासी कल्याण आश्रम के स्थापक वनयोगी बाला साहब देशपाण्डे सहित कई कार्यकर्ताओं से उनका सम्पर्क रहा। 1985 में भिलाई में वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित प्रथम महिला सम्मेलन की मुख्य अतिथि बन कर जनजाति महिलाओं का मार्गदर्शन किया। धर्मान्तरण के विरोध में सतत मुखर रहीं। उन्होंने श्रीमती इन्दिरा गांधी को लिखित रूप में कहा कि धर्मान्तरण बंद होना ही चाहिए। इस बात की देश भर में बहुत चर्चा रही। 1972 में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के लिए उन्हें ताम्रपत्र दिया गया, तो लाल किले का सभाखण्ड तालियों से गूंज उठा। यह ताम्रपत्र समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को दिया जाता है। 1982 में पद्मभूषण से सम्मानित भी किया गया। 78 वर्ष की आयु में 17 फरवरी 1993 को रानी माँ गाईदिन्ल्यू का दु:खद अवसान हुआ। माननीय राज्यपाल की उपस्थिति में सम्पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार हुआ। भारत सरकार ने 1996 में उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया। वर्ष 2015 में सम्पूर्ण भारत वर्ष में उनकी जन्मशती निमित्त भव्य कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। रानी माँ ने केवल नागालैण्ड अथवा मणिपुर की अपितु सम्पूर्ण भारत की प्रेरणामूर्ति बनीं। इतिहास भी स्वतंत्रता संग्राम के उनके योगदान के लिए उनका सदैव स्मरण करेगा। रानी गाईदिन्ल्यू के नेतृत्व की भूमिका आज भी नागा समुदाय ही नहीं अपितु समस्त भारतवर्ष के लिए प्रेरक एवं अनुपम उदाहरण है।

(बनबंधु से साभार) ■

नैपुण्य शिविर : नेतृत्व कौशल की प्रयोगशाला

- विवेक चिरानिया, सह संगठन मंत्री, कोलकाता महानगर

जगमगाते सूरज की किरणों के संग,
उठता भारत गर्व से अपने रंग,
निपुण कार्यकर्ताओं की टोली होगी
समर्पण की धारा जब बहेगी!

'सफल जीवन के लिए साहस, कड़ी मेहनत, आत्म-निपुणता और बुद्धिमान प्रयास सभी आवश्यक हैं।' जब हममें आत्म-निपुणता विकसित हो जाती है तो सभी स्थितियों में खुद को नियंत्रित करने की क्षमता आ जाती है और आप सचेत रूप से लगातार अपने लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ते हैं। आप अपना उद्देश्य जानते हैं, और आपके पास चीजों को जानबूझकर, केंद्रित और सम्मानजनक तरीके से करने के लिए आवश्यक आत्म-अनुशासन है। इसी को लक्षित कर प्रतिवर्ष कोलकाता-हावड़ा महानगर पूर्वांचल कल्याण आश्रम नैपुण्य शिविर का आयोजन करता है। इसी कड़ी में दिनांक 24 सितम्बर 2023 को पूर्वांचल कल्याण आश्रम का नैपुण्य शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में 51 महिला तथा 44 पुरुष कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। विशेष वक्ता के रूप में उपस्थित थे अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय प्रचार प्रसार प्रमुख श्री प्रमोद जी पेठकर। नैपुण्य शिविर तीन सत्रों में बाँटा गया था। प्रत्येक सत्र अपने आप में अद्भुत और विवेचना और गवेषणा से परिपूर्ण था।

प्रथम सत्र में श्री प्रमोद जी पेठकर ने सोशल मीडिया के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया का उपयोग सिर्फ मनोरंजन के लिए करना उचित नहीं। फेसबुक, ट्विटर तथा अन्य सोशल मीडिया चैनलों का उपयोग कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं को बढ़ चढ़ कर करना चाहिए तथा इसके माध्यम से अपनी विचारधारा एवं गतिविधियों को समाज तक पहुंचाने की चेष्टा करनी चाहिए।

द्वितीय सत्र में श्रीमती सीमा जी रस्तोगी ने कार्यकर्ताओं को कल्याण आश्रम के प्रति अपने अनुभव तथा विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया। कई नए तथा पुराने कार्यकर्ताओं ने इस चर्चा में उत्साहपूर्वक अपनी बातें रखीं। वनयात्रा के महत्व पर गहन चर्चा हुई और सीमा जी ने सभी कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया कि वे नियमित वनयात्राओं में भाग लें और वनवासी क्षेत्रों का भ्रमण कर वहाँ की गतिविधियों का हिस्सा बनें। श्रीमती स्नेहलता जी बैद ने भी अपने विचार रखे। ध्येयनिष्ठ समर्पण का भाव और प्रतिपल विनयशील होना, वाणी में संयम का होना, आलोचना एवं लालसा से रहित सात्विक और प्रेरक जीवन जीना, स्वयं के अच्छे कार्यों का श्रेय भी किसी और को देना, यही एक अच्छे और समर्पित कार्यकर्ता के गुण हैं, ऐसा उन्होंने कहा। अपने वक्तव्य में उन्होंने कई प्रेरक पंक्तियाँ उद्धृत कीं तथा कहा कि ऐसा कोई दिन नहीं जाना चाहिए जब हम कुछ नया न सीखें -

'कुछ लिख के सो, कुछ पढ़ के सो, जिस जगह जागा तू सवेरे, उस जगह से आगे बढ़ के सो।' इसके पश्चात सीमा जी ने कल्याण आश्रम से सम्बंधित प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम लिया जिसमें सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया और इस नवीन प्रयास की बहुत सराहना भी की।

तृतीय सत्र में श्री महेश जी मोदी तथा श्रीमती उमा जी सुराणा ने सामाजिक संपर्क से सम्बंधित विषयों

पर चर्चा की और अपने अनुभवों को साझा किया। कार्यकर्ताओं ने सहयोगकर्ताओं एवं अन्य लोगों से संपर्क के दौरान उठने वाले प्रश्नों को रखा तथा महेश जी एवं उमा जी ने उन प्रश्नों का समाधान किया।

चतुर्थ एवं समापन सत्र में श्री शंकरलाल जी अग्रवाल ने वनवासी कार्यों पर अपने विचार रखे। कल्याण आश्रम के तीन आयामों - सेवा, संगठन तथा जागरण के विषय में बताते हुए उन्होंने वनवासी क्षेत्रों के कार्य से जुड़ने और वहाँ ध्यान रखने वाली सावधानियों के बारे में चर्चा की। निरंतरता की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि वनवासी क्षेत्रों में भ्रमण के समय उन्हें वनवासियों से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करने की चेष्टा करनी चाहिए तथा उनके साथ थोड़ा समय भी व्यतीत करना चाहिए। सिर्फ सेवा कार्य ही पर्याप्त नहीं हैं यदि हम वनवासियों के साथ आत्मीयता स्थापित ना कर सकें। अंत में श्री प्रमोद जी पेठकर ने कल्याण आश्रम के कार्य के विस्तार की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कल्याण आश्रम द्वारा प्रथम छात्रावास की शुरुआत जशपुर में सिर्फ 13 छात्रों के साथ 1952 में हुई थी। अभी हम 53000 से अधिक वनवासी गाँवों तक पहुँच चुके हैं परन्तु एक लाख से भी अधिक गाँव ऐसे हैं जहाँ अभी भी कल्याण आश्रम को पहुँचना है और कम से कम एक प्रकल्प शुरू करना है। अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है और हमें बिना थके बिना रुके अपने प्रयासों को निरंतर बनाये रखना है।■

तू-मैं एक रक्त का जीवन्त निदर्शन है शिशु मेला

- पूजा अग्रवाल, कार्यकर्ता, युवा समिति

नन्हीं-नन्हीं जल की बूँदें,
बरसातों में खेलें कूदें,
ऊपर से गिर कर मिट जाएँ,
हम बच्चों का दिल बहलाएँ।
आओ शिशु मेला में जाएँ।।

17/12/2023 को आयोजित उत्तर 24 परगना के नज़त ग्राम में आयोजित शिशु मेला में हमारे 11 शिशु शिक्षा केंद्रों के 151 बच्चे आए। जहाँ हमने खुले आसमान के नीचे सूरज की किरणों और पेड़ों की सघन छाया में स्फूर्ति प्रदान करने वाला संतोषप्रद दिन बिताया, इनके साथ क्षणों को संजोया। अद्भुत बच्चे और उनके साथ खेलकर हमने अपने बचपन के दिनों को फिर से याद किया। हम लोग कोलकाता के 12 बच्चों समेत 40 लोग उल्टाडांगा से सुबह 8 बजे निकले। हम सुबह 11 बजे निर्धारित समय पर खेल के मैदान पर पहुँचे, जहाँ शिशु शिक्षा केंद्र के बच्चे पहले से ही इकट्ठे थे। फूलों की पंखुड़ियों और शंख ध्वनि के साथ हमारा भव्य स्वागत किया गया। सभी बच्चे बहुत उत्साहित थे। हमने बच्चों को कई टीमों में बाँट दिया और कई खेल खेले। बच्चों और शिशु शिक्षा केंद्र के शिक्षकों के लिए भी दौड़ आयोजित की गई। सभी विजेताओं को पुरस्कार दिये गये। बाद में सभी को दोपहर के भोजन में स्वादिष्ट खिचड़ी, टमाटर की चटनी और पापड़ परोसा गया। हम शाम 4 बजे वापस चले और शाम 7.30 बजे सुखद स्मृतियों के साथ कोलकाता पहुँचे।■

पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित
चिकित्सा शिविर

-विवेक गोयल, प्रांतीय चिकित्सा प्रमुख, द.बं.

कल्याण आश्रम के चिकित्सा शिविर का प्राथमिक उद्देश्य आदिवासी समूह के सदस्यों के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करने वाली बीमारियों के दुष्प्रभाव को कम करना है। तपेदिक, कुष्ठ रोग, एचआईवी, हेपेटाइटिस और अन्य संक्रामक रोग पहली श्रेणी में आते हैं। चिकित्सा शिविर आमतौर पर जनजातीय भाई-बहनों के लिए मुफ्त परीक्षण प्रदान करते हैं। ये परीक्षण विभिन्न हैं। सबसे सामान्य प्रकार का परीक्षण रक्त-संबंधी परीक्षण और नेत्र ज्योति परीक्षण है। इनके अलावा, चिकित्सा शिविर में मधुमेह, गुर्दे की कार्यप्रणाली और अन्य विभिन्न विकारों के परीक्षण भी किए जाते हैं। कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित ये शिविर बुनियादी और विशिष्ट चिकित्सा सेवाएं प्रदान करते हैं, स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं और बीमारी के प्रसार को रोकने में मदद करते हैं। स्वास्थ्य असमानताओं को दूर करने और वनवासी समाज के समग्र स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए चिकित्सा शिविर एक मूल्यवान उपकरण हैं। स्वास्थ्य शिविर के उद्देश्य और दायरे में दिए गए इलाके में स्वास्थ्य देखभाल सुविधा का प्रचार-प्रसार शामिल है। स्वास्थ्य देखभाल, प्रारंभिक जांच और बीमारी का पता लगाना, वंचित समुदाय की आबादी तक पहुँचना और विभिन्न बीमारियों के बारे में जागरूकता इन शिविरों के मुख्य उद्देश्य हैं।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम (अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम से सम्बद्ध) द्वारा झाड़ग्राम के जनजातीय क्षेत्रों बेलपहाड़ी तथा झिलिमिलि में गत 30 सितम्बर और 1 अक्टूबर को चिकित्सा शिविर (Medical Camp) का आयोजन किया गया। M.P. Birla Eye Clinic ने अपने 10 लोगों की टीम और अत्याधुनिक व्यवस्था के साथ 800 से अधिक ग्रामवासियों की नेत्र चिकित्सा एवं जांच की। लगभग 350 लोगों को चश्मे दिए जाने तथा 170 मरीजों की कोलकाता में नि:शुल्क शल्य चिकित्सा (Surgery) की व्यवस्था की गयी है। इसके अतिरिक्त 550 से अधिक लोगों की अन्य समस्याओं (रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग, स्त्री रोग इत्यादि) की जांच कर उन्हें नि:शुल्क दवाएं प्रदान की गयीं। कोलकाता से 3 सीनियर डॉक्टर्स (सामान्य चिकित्सक, स्त्री रोग विशेषज्ञ, हृदय चिकित्सक) और बांकुड़ा मेडिकल कॉलेज के फाइनल ईयर के 5 छात्रों ने पूरी तन्मयता के साथ इन शिविरों में अपना योगदान दिया। व्यवस्था को सुचारु रूप से संभालने के लिए कल्याण आश्रम कोलकाता महानगर की नगरीय समितियों के 34 कार्यकर्ता गर्मी और बरसात की चिंता किये बिना दो दिन डटे रहे। जीण माता मंदिर (न्यू टाउन) के 11 स्वयंसेवकों ने भी पूरे समय उत्साहपूर्वक सहयोग किया। ■

अमृत वचन

कोई वस्तु अच्छी या बुरी नहीं होती है। अच्छाई और बुराई का आधार हमारे विचार ही होते हैं।

- शेक्सपियर

गणेश पूजन के साथ हुआ धन-संग्रह अभियान का शुभारंभ

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर समिति

पूर्वांचल कल्याण आश्रम अपनी अनेक योजनाओं के माध्यम से वनवासी समाज को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। जनजाति समाज के उत्थान के लिए अनेक प्रकल्प चल रहे हैं। इन प्रकल्पों के सुचारु रूप से संचालन के लिए प्रतिवर्ष धन संग्रह और जन संग्रह का शुभारंभ विघ्नहर्ता, मंगलकर्ता, शुभप्रदाता गणेश जी महाराज के पूजन से ही होता है। इस बार यह कार्यक्रम 10 दिसम्बर 2023 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के प्रथम सत्र में सभी समितियों ने अपने संग्रह का लक्ष्य रखा। इस पुनीत कार्य के संचालन में आने वाली सुविधा और असुविधा की विवेचना भी हुई। तत्पश्चात चाय पान का लघु अवकाश हुआ। इसके बाद द्वितीय सत्र प्रारंभ हुआ।

द्वितीय सत्र का प्रारंभ शैलजा बियानी जी के एकल गीत से हुआ। सामूहिक गीत शीला जी सराफ ने लिया। इसी सत्र में कार्यकर्ताओं के दायित्व परिवर्तन और नए दायित्व की भी घोषणा हुई।

सत्र का आकर्षण था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री सुनील पद गोस्वामी जी का बौद्धिक व्याख्यान। गोस्वामी जी अपनी चिर परिचित सरल सहज शैली से कार्यकर्ताओं के मन को जीतने में कुशल हैं। अपनी सुबोधगम्य भाषा और आत्मीय व्यवहार से सामने वाले को अपना बना लेना सुनील जी के व्यक्तित्व की महती विशेषता है। संघ और कल्याण आश्रम के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए आपने आज से तीस साल पहले के समय की कठिनाइयों की चर्चा की। संघ के प्रकल्पों के संचालन के लिए अर्थ संग्रह के मार्ग में आने वाली बाधाओं का भी वर्णन किया। आपने कल्याण आश्रम के प्रेरणा पुरुष स्वर्गीय बसंत राव भट्ट को याद किया। बसंत दा के माध्यम से 30 साल पहले और आज के समय की तुलनात्मक विवेचना की। आपने अपने वक्तव्य के माध्यम से बताया कि पहले धन संग्रह के लिए जाने वाले कार्यकर्ताओं को बहुत अपमानित होना पड़ता था। बसंत दा का उदाहरण देते हुए आपने कहा कि बसंत दा ने ही हमें सिखाई, घात-प्रतिघात के बीच संगठन को खड़ा करने की कला! पूर्वोत्तर भारत में जनजाति समाज को राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए बसंत दा ने अनेक कष्ट सहे। उनके अथक प्रयास का ही फल है कि आज पूर्वोत्तर भारत स्वयं को भारत का अंग मानने में गर्व का अनुभव करता है। धर्म परिवर्तन की आड़ में पूर्वोत्तर भारत को भारत से अलग करने का षडयंत्र रचा गया था। वह उनके प्रयत्न से असफल हो गया। कल्याण

आश्रम की धन संग्रह योजना ने जीवन बदलने का कार्य किया। छात्रावास योजना की परिकल्पना ने जनजाति समाज को देश से जोड़ने का अद्भुत कार्य किया। इस योजना के जनक थे अपने बसंत दा। इन छात्रावासों से निकलकर जनजाति समाज की पीढ़ी पूरे पूर्वोत्तर भारत में राष्ट्रीय एकता और अखंडता का अलख जगा रही है। इस संबंध में आपने मंचासीन डॉ चूनाराम मुर्मू का उदाहरण भी दिया जिन्होंने छात्रावास में निवास कर शिक्षा प्राप्त की। कार्यकर्ताओं में ओज और तेज भरते हुए कहा कि इस धन संग्रह से हृदय परिवर्तन और जीवन परिवर्तन भी हो रहा है। यह कोई छोटा कार्य नहीं है। इस संग्रह में यदि अपमान भी सहना पड़े तो इसलिए सह लेना होगा हमारा कार्य समाज परिवर्तन और जीवन परिवर्तन के लिए है। आपने हास परिहास में धन संग्रह के लिए राजस्थानी लोकोक्ति का उदाहरण भी दिया। आपने कहा कि आज भी धन संग्रह के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। स्वामी विवेकानंद जी के कथन को स्मरण करके कहा .. Expansion is life contraction is death। सुनील दा ने संघ से जुड़े राममंदिर आंदोलन को याद किया। इस कड़ी में कोठारी बंधुओं के बलिदान को नम आँखों से स्मरण कराया। आपने कहा कि सत्कार्य के लिए किया जाने वाला बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता। संकल्प यदि दृढ़ हो तो स्वप्न साकार होता है। मंदिर वहीं बनाएँगे और आज हर मन मंदिर बन गया। जनजाति समाज को जगाएँगे तो जग गया। बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। अपनी मनस्वी वाणी को विराम देते हुए सुनील दा ने सभी कार्यकर्ताओं को देश भक्ति की कविता सुनाई। जीवन सुमन चढ़ाकर आराधना करेंगे... तेरी जनम जनम भर हम अर्चना करेंगे... वंदना करेंगे... जननी समान तू है... तेरे लिए जिएंगे, तेरे लिए मरेंगे... ■

उदारता, दान और धर्म परायणता के पर्व,

मकर संक्रांति के अवसर पर अपील

दान सुपात्र को या सही व्यक्ति को दिया जाए जो प्राप्त दान को श्रेष्ठ कार्य में लगा सकें, उसी को दिया गया दान श्रेष्ठ होता है। वही पुण्य फल देने में समर्थ होता है। धार्मिक मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन शुभ मुहूर्त में गंगा स्नान और दान करने से व्यक्ति के सात जन्मों के पाप धुल जाते हैं।साथ ही सूर्य देव की कृपा प्राप्त होती है। इसके अलावा मकर संक्रांति पर कई चीजों का दान करना भी पुण्य फलदायी माना जाता है। इस दिन दान पुण्य से सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है। दान पाने वाले की पात्रता को देखकर ही दान करना चाहिए। श्रेष्ठ दान वह है जो मित्र की भूमिका निभा सके। यों तो अपने सभी कार्यकर्ता प्रति वर्ष मकर संक्रांति कैम्प लगाकर अपने वनवासी भाई-बहनों के जीवन के उत्थान के लिए वस्तु संग्रह, धन संग्रह और जनसंग्रह का पुनीत कार्य करते ही हैं, फिर भी एकबार अपने कार्यकर्ता बंधु - भगिनी सभी से अपील है कि मकर संक्रांति पर्व के उद्देश्य को जन-जन तक पहुँचाएँ। ■

बना ले लक्ष्य अपने,
कभी भटक न पाएगा।
पैर रख अंगद के जैसा
हिला जिसे कोई न पाएगा।
जब तक सफलता न मिले
प्रयास बारम्बार कर।

स्वावलंबन योजना का आलोक प्रखर है

- विद्या खेमका, संयोजिका, स्वावलंबन योजना

जनजातीय बहनों के जीवन में आया बदलाव

सोनाखाली दक्षिण 24 परगना ज़िला की बहन सुश्री अष्टमी सरदार ने कल्याण भवन में स्वावलंबन

योजना के अंतर्गत सिलाई सीखकर अपनी दुकान खोल ली। बहन ने यह तय कर लिया कि स्वावलंबन की इस योजना को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करेगी । आज आत्मविश्वास के साथ अपनी सिलाई की दुकान चला रही है, साथ ही अन्य भाई बहनों का जीवन भी सँवार रही है। कल्याण आश्रम परिवार की ओर से आपको बहुत बहुत शुभकामनाएं। ■

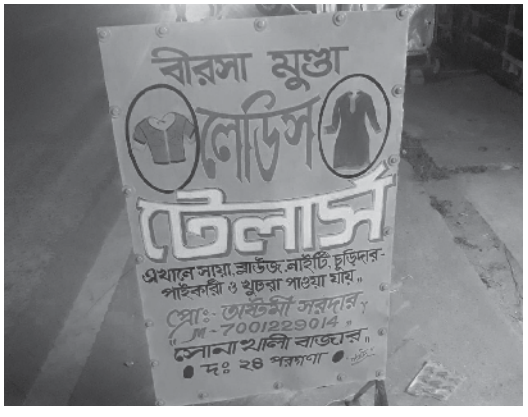

शोक संदेश

मेदिनीपुर निवासी श्रीमती भारती कुन्डु (धर्मपत्नी स्वर्गीय गजेन्द्र नाथ कुन्डु) उम्र 84 वर्ष का मंगलवार 26 सितम्बर को परलोकगमन हो गया। आप मेदिनीपुर शहर के स्वयंसेवकों के लिए माँ समान थी। परम पूज्यनीय गुरुजी आपके घर पर दो बार आये। माननीय बसंत राव जी भट्ट एवं पूर्वांचल कल्याण आश्रम के प्रथम संगठन मंत्री माननीय रथीन्द्र नाथ चक्रवर्ती के इस परिवार से बहुत अच्छे सम्पर्क थे। आपके परिवार ने बागमुंडी छात्रावास की जमीन खरीदने हेतु प्रचुर सहयोग किया था। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें। ■

अमृत वचन

बिना ज्ञान के स्वतंत्रता हमेशा दुखदाई होती है और बिना स्वतंत्रता ज्ञान हमेशा बेकार।

- जॉन एफ कैनेडी

स्वप्न हुआ साकार

नव निर्मित बागमुण्डी छात्रावास का शुभ उद्घाटन

- उत्तम महतो, दक्षिण बंग प्रान्त संगठन मंत्री

1978 में मकर संक्रांति के अवसर पर वनवासी कल्याण आश्रम का पूर्व भारत का प्रथम छात्रावास पुरुलिया जिले में अयोध्या पहाड़ के निकट

बागमुण्डी में प्रारम्भ हुआ। माननीय बसंत राव जी भट्ट के अथक प्रयास से इस छात्रावास का निर्माण हुआ था। शिक्षा, संस्कार के बिना उन्नति नहीं है, इन विचारों को जीवन्त करने के लिये वनवासी बालकों के लिये उन्होंने इस कार्य को मूर्त रूप प्रदान किया। इस प्रथम प्रकल्प का शुभ उद्घाटन माननीय श्री बसंत राव जी भट्ट के कर कमलों से हुआ था। 98% जनजाति आबादी वाले अयोध्या पहाड़ में 78 ग्राम थे और सभी 78 ग्रामों में शिक्षा का प्रकाश उस समय तक सही ढंग से नहीं पहुंचा था।

प्रारम्भ के कई वर्षों तक छात्रावास किराये के परिसर में चला। फिर मेदिनीपुर और कलकत्ता महानगर के कुछ लोगों के सहयोग से कल्याण आश्रम ने वहाँ छात्रावास के लिए भूमि का क्रय किया। पर्याप्त धन के अभाव में जब छात्रावास का निर्माण हुआ तो उसमें सीमेंट की जगह मिट्टी और गारे का उपयोग ज्यादा किया गया।

कई मेधावी छात्रों ने उस छात्रावास में रहकर शिक्षा प्राप्त की। लगभग 350 छात्र ऐसे हैं जो उस क्षेत्र में अपनी मेधा अथवा उपलब्धियों के कारण आज भी अपनी एक पहचान रखते हैं। लगभग 40 वर्षों तक यह छात्रावास मिट्टी और गारे से बने भवन में ही चलता रहा। कुछ वर्ष पूर्व कोलकाता-हावड़ा महानगर की समितियों ने यह तय किया कि छात्रावास का पुनर्निर्माण किया जाए। कार्यकर्ताओं ने पुनर्निर्माण के लिए धन संग्रह हेतु बहुत मेहनत की और अंततः कार्य आरम्भ हुआ। इस बीच कोरोना जैसी आपदा के कारण कार्य की गति धीमी हुई और धन-संग्रह पर भी असर हुआ परन्तु धीरे-धीरे महामारी के काले बादल छँटे और निर्माण कार्य को गति मिलने लगी।

अब बागमुण्डी छात्रावास के तीनमंजिला भवन (4900 स्क्वायर फ़ीट) का निर्माण पूर्णता की ओर है। इस भवन में भूतल पर 40 छात्रों के रहने की व्यवस्था है। प्रथम तल पर कार्यकर्ताओं के रहने की तथा वनयात्रा, अभ्यास वर्ग इत्यादि की व्यवस्था है। द्वितीय तल पर प्रार्थना एवं सभा कक्ष हैं। आगामी 14 फ़रवरी 2023, बसंतपंचमी के शुभ अवसर पर अखिल भारतीय सह-सभापति एच के नागो जी की उपस्थिति में नवनिर्मित छात्रावास के उद्घाटन का कार्यक्रम निश्चित हुआ है। ■

संगठन के बढ़ते कदम

पुरुलिया में महाविद्यालयीन छात्रों के लिये छात्रावास का भूमिपूजन

- संजय रस्तोगी, दक्षिण बंग प्रांत मंत्री, पू.क.आ.

पुरुलिया में सिद्धो कान्हो विश्वविद्यालय के निकट महाविद्यालय के छात्रों के लिए एक छात्रावास की परिकल्पना हमने ली थी। वर्तमान में पुरुलिया जिला कार्यालय में 4-5 छात्रों के रहने की व्यवस्था की जाती है, जिन्होंने उच्च-माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण करके महाविद्यालय में प्रवेश पाया है। ऐसे जीर्ण-शीर्ण भवन में रहकर, अपनी शिक्षा पूर्ण करके भी **अनल किसको** जैसे छात्र हुए जिन्होंने संस्कृत में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। गत श्री शिव महापुराण कथा आयोजन के समय इसकी सम्वर्धना भी की गयी थी।

पूर्व क्षेत्र में पुरुलिया जिले में ही वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य आरम्भ हुआ था और वर्तमान में पुरुलिया जिले में पांच बालक-छात्रावास और एक बालिका-छात्रावास है जिसमे उच्च-माध्यमिक स्तर तक के बालक-बालिकाएँ रहकर शिक्षा ग्रहण करते हैं। इन सभी छात्रावासों में उच्च-माध्यमिक के पश्चात छात्रों का रहना स्थानाभाव के कारण संभव नहीं हो पाता है। ऐसा देखा गया है कि कई छात्र-छात्राएँ प्रतिकूल आर्थिक अवस्था एवं रहने की उचित व्यवस्था न होने के कारण आगे की शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं। कार्यालय में रखकर जिन छात्रों की शिक्षा-व्यवस्था की गयी उन्होंने अच्छा परिणाम दिखाया है किन्तु कार्यालय में ज्यादा छात्रों के रहने की व्यवस्था संभव नहीं है। ऐसी परिस्थिति में प्रदेश कार्यकारिणी ने यह निश्चय किया कि यदि महाविद्यालय के छात्रों हेतु एक छात्रावास का निर्माण किया जाए तो जनजाति समाज के छात्र उपकृत होंगे।

इस अवधारणा को ध्यान में रखकर पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता-हावड़ा महानगर ने धन संग्रह के लिए परम पावन पुरुषोत्तम श्रावण मास में श्री शिव महापुराण कथा का आयोजन करने का निश्चय लिया। श्रद्धेय मृदुलकांत जी शास्त्री ने महा शिव पुराण कथा वाचन करते हुए श्रोताओं को छात्रावास हेतु सहयोग करने का आह्वान किया। जनजाति समाज के छात्रों के लिए एक भव्य छात्रावास बने जिसमें एक स्मार्ट-क्लासरूम तथा स्वावलम्बन के कुछ प्रकल्प एवं प्रशिक्षण केंद्र भी चलाये जा सकें ताकि जनजाति समाज के छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके, इस परिकल्पना के साथ ही एक धन संग्रह अभियान चलाया गया और इसमें यथोचित सफलता भी मिली। कथा आयोजन से न केवल धन संग्रह हुआ, समाज के एक विशाल वर्ग का कल्याण आश्रम से परिचय भी हुआ और भविष्य में इसके कार्य विस्तार की चेष्टा को भी बल मिला।

प्रांत समिति, कोलकाता-हावड़ा महानगर एवं पुरुलिया जिला समिति के सामूहिक निर्णय एवं प्रयास से छात्रावास के निर्माण कार्य में उत्साहपूर्ण गति आयी है। भूमि-क्रय तथा भूमि-पूजन का कार्य सम्पन्न करके अब वहां निर्माण कार्य आरम्भ हो चुका है। भगवान् शिव के आशीर्वाद से बहुत शीघ्र ही एक भव्य छात्रावास बनकर तैयार होगा और जनजाति छात्रों को उच्च शिक्षा तथा स्वावलम्बन की एक उत्तम व्यवस्था उपलब्ध कराने में हम सक्षम होंगे, ऐसी हमारी आशा है। ■

अनुकरणीय

- तारा माहेश्वरी, सह-संपादिका कल्याण भारती

करने को नया अब तो, वह निर्माण जरूरी है।
हृदय निर्मल कर दे, वह दान जरूरी है ।।

★ हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ता अंबिका प्रसाद जी भूत ने अपनी पत्नी लता देवी के देहावसान पर 11000 रूपये की राशि कल्याण आश्रम को प्रदान की है। ध्यातव्य है कि भाई साहब ने अपनी मातुश्री के देहावसान पर आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व उनकी स्मृति में कोलकाता के बैकुंठनाथ मंदिर में पूज्य रमेश जी शास्त्री उपमन्यु के व्यासत्व में भागवत कथा करवाई थी। इसी कथा से प्रेरणा पाकर प्रत्येक वर्ष अधिक मास में संगठन के माध्यम से राम कथा, भागवत कथा और शिव पुराण का क्रम प्रारंभ हो गया है। बीज वपन का कार्य माननीय अंबिका जी ने ही किया। अंबिका जी के समर्पण को नमन।

★ *उज्ज्वल कर दे आँगन, वह वरदान जरूरी है,*
हृदय को निर्मल कर दे, वह दान जरूरी है।

इसी श्रृंखला में अपनी अलीपुर समिति की कार्यकर्ता और पूर्वांचल कल्याण आश्रम महानगर कार्यकारिणी की सदस्या रंजना बियानी ने अपने विवाह की 50वीं वर्षगाँठ पर कल्याण आश्रम के लिए 51 हजार की धनराशि भेंट स्वरूप प्रदान की है।

★ इसी क्रम में श्री उम्मेद सिंह बैद ने अपने दौहित्र जन्म के उपलक्ष में संगठन को 1 लाख रुपये की धनराशि भेंट की है। कल्याण आश्रम परिवार कामना करता है कि परिवार के सभी प्रसंगों में वनबंधु को स्मरण करने की परम्परा अविच्छिन्न रुप से चलती रहे। सभी को साधुवाद। ■

बस्तर के आंचलिक शब्दों का हिंदी रूपांतर

संकलन कर्ता - रामगोपाल बागला

बस्तर, भारत के छत्तीसगढ़ प्रदेश के दक्षिण दिशा में स्थित जिला है। बस्तर जिले एवं बस्तर संभाग का मुख्यालय जगदलपुर शहर है। यह पहले दक्षिण कौशल नाम से जाना जाता था। बस्तर के बारे में किंवदंती है कि यह क्षेत्र 'दंडकारण्य' के नाम से प्रसिद्ध था। कल्याण भारती पाठकों के लिये हम बस्तर में बोले जाने वहाँ के आंचलिक शब्द और उनका हिंदी रूपांतर प्रस्तुत कर रहे हैं -

छतोड़ी - बाँस की छतरी
बिसेनी - चारपाई
भुंई - पृथ्वी
लीकरी के छाता - मधुमक्खी का छत्ता
गगना - रोना
कोलिया - सियार
टंकिया - कुल्हाड़ी
पुज्ज देना - मार देना
घंगड़ा - जवान
राधा खोली - रसोई
मिरि - मिर्चा
छेना - कंडा
पन्नसकुआ - कटहल
कोरी - बीस
ओड़ गोड़्ना - खींचना
जाख - सामान
बोहड़ा - वापस लेना
भाटो - जीजा
चिरक चाटक - उधेड़बुन
ककवा - कंघा
नंदी थो पूरा चेगली - पानी सिर के ऊपर

सौजन्य: रजनी शर्मा ■

बोध कथा...

व्यक्ति की सुंदरता उसके गुणों से होती है

एक रानी को अपने सौंदर्य पर बहुत गुमान था। लेकिन गुणों में वो सौंदर्य के बिल्कुल विपरीत थी। वह एक अवगुणी रानी थी। लोग डर कर उनके सामने तो कुछ नहीं कहते थे लेकिन पीठ पीछे उनकी बहुत बुराई करते थे। एक दिन वह वेश बदलकर नगर भ्रमण पर अपनी खूबसूरती के किस्से सुनने के लिए निकली। उसने नगर की महिलाओं से रानी के बारे में पूछा, तुम्हारी रानी कैसी है? सुना है वह बहुत अधिक खूबसूरत है। सभी महिलाओं ने उसके अवगुणों का बखान करना शुरू कर दिया,'ऐसी खूबसूरती का क्या मतलब जिसमें एक गुण सुंदर नहीं हो।'

रानी को अपने बारे में ऐसी बातें सुनकर बड़ा कष्ट हुआ। एक महिला ने कहा हमारी रानी उस वृक्ष की भांति है जिसका फूल देखने में अति सुंदर है लेकिन उसका फल एकदम कड़वा है। किसी भी व्यक्ति की सुंदरता उसके गुणों से होती है न कि उसके ऊपरी सौंदर्य से। रानी अपने बारे में ऐसी बातें सुनकर हैरान रह गई। उसे अपने बारे में सब कुछ पता चल गया और उसने उसी दिन से अपने सौंदर्य का गुमान छोड़ दिया। उसे यह भी समझ में आ गया कि व्यक्ति की सुंदरता उसके शारीरिक सौंदर्य से नहीं बल्कि उसके गुणों से होती है। गुण ही व्यक्ति का सबसे श्रेष्ठ सुंदर गहना होता है। उसी दिन से रानी ने अपने सभी अवगुणों को त्याग दिया और एक गुणी रानी बनने का मन बना लिया। ■

कविता...

भारत का भाग्य विधाता...

- लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खीदा'

भारत का भाग्य विधाता।
उज्ज्वल भविष्य का दाता।
यह मंदिर तीर्थ कहाता ।।ध्रु।।

गत पाँच शतक तक रामलला का,
मंदिर क्षत-विक्षत था।
पुरखों के संघर्षों का फल,
मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा।।1।।
भारत का भाग्य विधाता..

जन-जन के मन में राम बसे हैं,
पुरुषोत्तम मर्यादा।
आदर्श पति, भ्राता, राजा,
श्रद्धा से नत है माथा।।2।।
भारत का भाग्य विधाता..

मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का,
यह अवसर गरिमा दाता।
हर भारतवंशी, भारतवासी,
घर-घर दीप जलाता।।3।।
भारत का भाग्य विधाता..

बस गई अयोध्या अब काशी,
फिर मथुरा धाम सजाता।
हर उजड़े मंदिर को फिर से,
जन-जन सम्मान दिलाता।।4।।
भारत का भाग्य विधाता..

विद्या-ब्रह्मा, लक्ष्मी-विष्णु,
गौरी-महेश जग त्राता।
और सिया-राम, रुक्मिणी-कृष्ण की,
गोद है भारत माता।।5।।
हर एक है भाग्य विधाता...
भारत का भाग्य विधाता...

नव निर्मित बागमुण्डी छात्रावास

पुरुलिया छात्रावास का भूमिपूजन

बागमुण्डी छात्रावास के नवीनीकरण का हुआ समापन,
और पुरुलिया छात्रावास का किया गया शुभ भूमि-पूजन।
वसंतराव के पुण्य ध्येय पर अविराम हमको चलना है;
शिक्षा पर बल देकर हमको संततियाँ शिक्षित करना है।।

गणेश पूजन कार्यक्रम २०२३

मंगलकारक सिद्धिविनायक के चरणों में आरती-वंदन ।
वार्षिक साधन-संग्रह हेतु प्रथम-पूज्य को अर्घ्य समर्पण ।।

Printed Matter

Book-Post

If undelivered please return to :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata - 700007
Phone : +91 33 4803 4533
Email : kalyanashram.kol@gmail.com